International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-08-2020; Accepted: 25-08-2020; Published: 11-09-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 22-23

सुब्रह्मण्य भारती की कविताओं में विश्व बंधुत्व की भावना

पी. राजरत्नम
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय, तिरुवारूर, तमिलनाडु, भारत

प्रस्तावना

सुब्रह्मण्य भारती का जीवनकाल १८८२ से १९२१ तक माना जाता हैं! तमिलनाडु के तूत्तुक्कुडी जिले में एट्टयपुरम नामक गांव में इनका जन्म हुआ । सामंतवाद और साम्राज्यवाद के युग में वे समता और स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे । साथ ही उनकी भावना वसुदैव कुटुम्बकम की थी. जब भारत देश अंध विश्वास एवं अगणित रूढ़ियों से रुवन हो गया था तब महाकवि भारती ने सच्चे राजनैतिक , सामाजिक तथा मानसिक स्वराज का स्वर निर्भय होकर गुंजित किया । उन्होने सुदूर दक्षिण भारत के कवी होने के नाते वे तमिल भाषा में लेखनी चलाई, किन्तु उनका लेखन भूगोल की सीमाओं को पार कर संपूर्ण भारत की संस्कृति की अभिव्यक्ति के साथ साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भावनाओं को भी अभिव्यक्त करता था, जो अंततः हमारे मानव स्वाभाव में निहित विश्व चेतना का ही प्रतिनिधित्व करती है । उन्होने भारत के इतिहास में प्रगाढ़ देशप्रेमी , स्वतंतयोपासक, समाज सुधारक, राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत और नई मानवीय व्यवस्था के मसीहा के रूप में विशिस्ट और अमर गौरव प्राप्त किया ।

इस लेख में प्रवेश करने के पूर्व विश्व बंधुत्व के बारे में समझना जरूरी समझता हूँ । विश्व बंधुत्व भावना : सारे विश्व की मानव जाती एक है । सभी मनुष्य के खून का रंग एक ही है , एक ही सांस लेते है, एक सी ही सुख दुःख की संवेदनाएँ उनके शरीर पर जिनसे वे राग द्वेष जगाते रहते है एवं सुखी दुखी अनुभूति करते रहते हैं । इससे कोई फरक नहीं पड़ता की वह मनुष्य हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई या अन्य पथानुगामी है , क्योंकि सांस या संवेदनाएं इन सम्प्रदायों से परे हैं । कोई भी सांस न तो हिन्दू होती है न ही मुस्लिम , न ईसाइ या किसी अन्य पथ से सम्बन्ध । किसी भी पथ से सम्बन्ध क्यों ने हो यदि विकार जगाता है तो दुखी होगा ही कुदरत का कानून सबके लिए बराबर हैं । इसलिए तो कहा जाता है की कानून की नज़र में सब बराबर हैं । एक सद्गृहस्थ जैसे अपनी पत्नी और संतान को जोड़े रखता है वैसे ही परिवार के अन्य लोगो को, सगे सम्बन्धियों को देश वाशियों से एवं दुनिया के सभी लोगो से सम्बन्ध बनाये रखे, प्यार करते रहे ।

भगवन बुद्ध ने मनुष्य की एक ही जाती मानी थी । एक प्रमुख संत ने दोहराया " मानुष की जात सब एक कर जानिए । "

निर्धन को स्नेह सत्कार का सम्बन्ध बनाए रखना, उनसे सहानुभूति और सहयोग बनाकर रखना, संकट में पड़े बंधू - बन्धुओ की यथा शक्ति एवं सहायता पहुंचना , जाति संबंधों को जोड़े रखना , रंग-रूप , बोली भाषा, वेष- भूषा , वर्ण - गोत्र , किसी देश - विदेश का हो, मनुष्य तो मनुष्य ही हैं और वह एक ही जाती का प्राणी हैं। किसी विद्वान् के कहे अनुसार –

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया "

अर्थात संसार में सब सुखी रहे, सब निरोग रहे , सब सुख देखे और विश्व में कोई भी दुखी हो ।

विश्व बंधुत्व / वसुदैव कुटुम्बकम एक व्यापक मानव - मूल्य हैं । व्यक्ति से लेकर विश्व तक इसकी व्याप्ति है - व्यक्ति, परिवार , समाज , राष्ट्र और अंतराष्ट्र । गरज यह हैं की संपूर्ण विश्व इसकी परिधि में हैं । प्राणी के कल्याण की भावना की कामना ही इसका लक्ष्य है ।

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की कविताओ में विश्व बंधुत्व : उक्त विषय के लिए उनका यह एक विषय ही काफी है जो की भलाई और ज्ञान चाहे किसी भी देश से आवे या मिले, कोई भी दिखावे उसी राष्ट्र से पर चलने वाले / जाने वाले ही बुद्धिमान हैं , अच्छे है । भाषा के नाम पर जो लड़ाई देश-विदेश में चल रही है उसकी निवारण उन्होने कहा है ।

भारती के तमिल प्रेम, भारत शक्ति एवं विश्व बंधुत्व की भावना आदि में क्षेत्रवाद , संकीर्णता अथवा किसी प्रकार का ओछापन नहीं था उनकी कल्पना में व्यापकता हैं । उनके अनुसार सिंधु नदी पर चांदनी में तेलुगु गीत गाती हुई केरल की कन्याओं के साथ नौकाविहार संभव हैं । जैसे –

सिंधु नदी को इठलाती उर्मिल धरा पर,
उस प्रदेश की मधुर चांदनी रातों में ।
केरलवासिनी अनुपमेय सुंदरियों के संग
हम विचरेंगे बलखानी चलती नावों में ।
मधुर-मधुर तेलुगु गीतों को गाएंगे ।
सब शत्रुभाव मिट जाएंगे ।

यह कविता भाव यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर सिमित है फिर भी विश्व बंधुत्व बनाये रखने की नीव है । कितनी ऊँची भावना है । उनका राष्ट्रवाद आत्मा का हनन करनेवाला चरम आकांक्षा तथा समस्त मानव के लिए धरती पर शान्ति और सांसारिक सुख की कामना का समन्वय है । और एक सन्दर्भ में वे वीणा देवी सरस्वती से प्रत्येक गावं की प्रत्येक गली के प्रत्येक घर को माधुर्य से भरने और ज्योति करने की प्रार्थना करते है । उनके विजयनाद गीत में कहते है :

घर-घर में होवे कलाओ का प्रकाशन
घर गली में हो पाठशाला एक-दो
देश में गांव - गांव में
नगर-नगर में हो विद्यालय अनेक
जहाँ नहीं विद्या का वास हो
अग्नि के हवाले कर दे उस नगर को
अमंगलहरिणी अमृतरूपा शारदा
माँ की कृपा का मार्ग यह जानो ।

अच्छी शिक्षा, अधिक पाठशालाएँ , अध्यनन एवं कलाओ के माध्यम से दुनिया से रिश्ता तय कर सकते है । आज का युग इसकी साक्षी है।
विजयनाद कविता में एक जगह पर कवि प्रेम के साम्राज्य की घोषणा यूँ करते है –

'' मानव - मानव एक सामान
एक जाति की हम संतान
यही दृष्टि है ख़ुशी आज की
बजा नगाड़ा, करो घोषणा प्रेम -राज्य की।

तात्पर्य है मानव सब एक है। हम एक जाती के संतान है। इस ख़ुशी को नगाड़ा बजाकर मनाओ जिसके माध्यम से मंगलमय कामना की प्रतीक्षा करते है जो की प्रेम की जय अमित भावना से गूंजकर सारी दुनिया को घोषित कर दे की हम सब प्रेम भावना से रहे। जिसमे सब की भला हो। इस विशद विश्व में सब कुछ मंगलमय हो । उपयुर्क्त विचार से प्रतीत होता है की भारती की कविता में जान है और वे विश्व प्रेम की और हमे आकर्षित कर वासुदेव कुटुंबकम की भावना को बनाये रखने की घोषणा करते है।
वे हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई में कोई फरक नहीं मानते है। कहते है इन सबका भगवन एक ही है। जो अलग-अलग तरीके से पूजा पुनस्कार करते है। बस इतना ही है। फिर आपस में क्यों लड़ते है?

ब्राह्मण, जो अग्नि की पूजा करते है
मुस्लिम जो पश्चिम दिशा सम्मुख नमाज पढ़ते
ईसाई जो सूली का वनदन करते है
इन सबका भगवन
सबो में विद्यावान है
उस जग में एक ही मान
लड़ना भिड़ना व्यर्थ अभिमान।

विजयनाद कविता में रंग भेद को रंग बिरंगे बिल्लयों को उदहारण के रूप में देखकर कहते है की अनेक रंग के होते हुए भी सब बिल्लिया ही तो है देखिये-

रंग भेद तो कदम-कदम पर
नर से भेद नहीं होता पर
रंग भले ही अलग-अलग है
कहलाती बिल्ली ही सब है।
रंग कोई भी क्यों न हो
वर्ग एक ही न यहा तो
ऊंच नीच भाव रंगे में
क्या कह सकते है अंग में।

इससे स्पस्ट होता है की रंग में भेद हो सकता है मगर नर में भेद नहीं हो सकता है। मानव के आचार - विचार और भावनाओ में बहुधा हम में एकीकरण होना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण भावना अभिव्यक्त हुआ है। इन सब में सहोदर एवं भाईचारे रखने की प्रेरणा देते है वे एक स्थान में बताते है कमजोर को ताकतवर का निचोड़कर या खाकर जीना बेकार समझते है। जैसे-
धरती-धरती पर हम सब कोई

कमजोरो को ताकतवर
खाकर जिए ? यह क्या जीवन?

आज यह विडम्बना अधिक देखने को मिलता है और एक सन्दर्भ में कहते है –

सारे के सारे जान समुदाय में
मिलकर बढ़ाये ज्ञान- विज्ञान
करे यदि छोटो का उत्कर्ष
ईश्वर को होगा हम पर हर्ष।

कहते है बड़ो का बड़प्पन छोटो को साथ ले चलने में है । यही भावना उक्त चरणों में निरूपित होता है। सभी में भाई चारा निभाकर साम्य भावना लाने की कोशिश करता हुआ नजर आता है। विजयनाद शीर्षक कविता में उनका कहना है –

साम्य सभी में भाईचारा
इनके सिवा नहीं कुछ चारा
इतना ही होगा कल्याण
मिल पाएगा सबको त्राण।

इससे ज्ञात होता है की विश्व कल्याण की भावना एक दूसरे से भाई चारे के साथ रहने से ही साध्य है।
उपयुक्त सभी अभिव्यक्तियों से कह सकते है की भाईचारे, प्रेम की जय, प्रेम राज्य, हिन्दू मुस्लिम ईसाई एकता, वर्ण भेद, जाती भेद, धार्मिक मतभेद आदि के जरिए सुब्रह्मण्य भारती सच्चे रूप में समाज सुधारक, क्रान्तिकार कवी व विश्व बंधुत्व की भावना रखने वाले कवी है जिन्होने विध्वंश नहीं, आत्मशोधक की प्राचीन भारतीय परंपरा की पुनः स्थापना की कोशिश की है। उनकी दिलचस्पी से स्वाधीनता की और विश्व बंधुत्व की वह आकांछा पुष्टित और पल्लवित होता हुआ नजर आती है।

सन्दर्भ सूची

1. सुब्रह्मण्य भारती, संकलित कविताए एवं गद्य, प्रकाशक अखिल भारतीय सुब्रह्मण्य भारती शताब्दी समारोह समिति.
2. तमिल काव्य में राष्ट्रवादी स्वर : सुब्रह्मण्य भारती, विश्व संवाद केन्द्र, नई दिल्ली.
3. बिजय कुमार रबिदास, डॉ॰ रामविलास शर्मा की दृष्टि में सुब्रह्मण्य भारती का जीवन और साहित्यकर्म, प्रकाशक सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली.